Vijay Kumar Jha
Deptt in History
Asstt Prof
V.S.J College Rajnagar

Degree Part II

Bhakti Movement

भक्ति शब्द भज धातु से से बना है जिसका अर्थ होता है सेवा। किन्तु अर्थात् ईश्वर के चरणों में पूर्ण रूप से आत्मसमर्पित हो जाना ही भक्ति नहीं है बल्कि उस वृत्ति को भक्ति कहते हैं जिसमें सांसारिक विषयों का ज्ञान प्रदान करने वाली इन्द्रियों कि स्वाभाविक वृत्ति निस्काम भाव से भगवान में लग जाय उसे भक्ति कहते हैं। वेद, पुराण, गीता, महाभारत तथा पुराण भक्ति के सिद्धान्तों से भड़ा परा है। ये साधन हमारे देश में अति प्राचीन काल से है और यही उपासना भक्ति मार्ग है। सभी धर्मों के मूल उद्देश्य एकमात्र ईश्वर कि प्राप्ति है।

कोई भी आन्दोलन किसी एकमात्र कारणों से नहीं होता है बल्कि उसके पीछे कई कारण होते हैं। इस आन्दोलन के भी कई कारण थे किन्तु इस आन्दोलन कहीं भी अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग नहीं हुआ था बल्कि व्यक्तिगत दर्शन पर आधारित आन्दोलन था।
(1) भक्ति मार्ग कि सरलता, (2) मुस्लिम आक्रमणकारी (3) जटिल वर्ण व्यवस्था, (4) क्रियात्मक शक्ति के नियोजन कि आवश्यकता, (5) समन्वय कि भावना आदि कारणों से भक्ति आन्दोलन संभव हुआ।

भक्ति मार्ग के सिद्धान्त :- इसके दो पक्ष थे - स्वीकारात्मक एवं नकारात्मक।

स्वीकारात्मक पक्ष :- ईश्वर कि एकता, ईश्वर के प्रति अपार प्रेम, गुरु कि महत्ता पर बल, हृदय कि स्वच्छता, मानवतावादी भावना, आत्म समर्पण।

नकारात्मक पक्ष :- सामाजिक कुरीतियों पर प्रभाव, जातिवाद और वर्गभेद में अविश्वास, तथा किसी विशिष्ट भाषा पर बल नहीं।

Scanned with Cam

Wednesday

कोई भी आन्दोलन में कुछ महान पुरुषों की अगुवाई आवश्यक होती है भक्ति आन्दोलन भी इससे परे नहीं था।

(1) रामानुजाचार्य :— इनका जन्म तिरुपति में 1016 ई० में हुआ था। वे शंकराचार्य के अनुयायी थे। उन्होंने वेदान्त संग्रह, वेदान्त सूत्र तथा भगवद्गीता का टीका लिखा। विशिष्टाद्वैत का सिद्धान्त इन्हीं की देन है। इनके अनुसार ज्ञान भक्ति, कर्म, योग से मोक्ष प्राप्त कर सकते

(2) रामानन्द :— 1299 ई० में कान्यकुब्ज परिवार में रामानन्द का जन्म हुआ था और शिक्षा वाराणसी में प्राप्त किये थे इनका मूल उद्देश्य धर्म तथा भक्ति के माध्यम से समाज सुधार करना था। इन्होंने सभी जातियों के लोगों को अपना शिष्य बनाया। वे दोहरा व्यक्तित्व के थे एक ओर वे ब्राह्मण के बन्धन मानते थे तो दूसरी तरफ साधु संतों के प्रति समानता का भाव रखते थे। वे विचार से कठोर, किन्तु आचार से दयालु थे।

(3) कबीर : कबीर का जन्म 1425 ई० में एक विधवा ब्राह्मणी के घर हुआ था। विधवा ने कबीर (नवजात) को लोक लाज के कारण वाराणसी में लहरतारा तालाब के पास लाकर छोड़ दिया जिसे नीरु नामक जुलाहा ने घर लाकर पालन पोषण किया और कबीर नाम रखा जिसका अर्थ महान होता है। कबीर ने स्वयं को हिन्दु-मुस्लिम से परे रखकर एक योगी कहा। कबीर मुस्लिम परिवेश में रहकर संस्कृत का भी गहन अध्ययन किया था इसने प्राचीन हिन्दू धर्म पर चोट करते हुये कहा था

पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़। ताते ये चाकी भली

पीस खाय संसार। मुसलमान धर्म के लिये कहा था

कांकर पाथर जोड़ि के मसजिद लेई चुनाय। ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय। कबीर ने हिन्दु धर्म के अवतारवाद, मूर्तिपूजा, तीर्थ यात्रा, छुआछूत पर व्यंग्य उड़ाया। कबीर के अनुसार शुद्ध विचार से ही धर्म पवित्र हो सकता है। कबीर निर्गुणवादी थे सगुण रूप को नहीं मानते थे। वे भी कण-कण में ईश्वर के रूप को देखते थे। वह आत्मा को सर्वव्यापी निराकार तथा सर्वव्यापी बताया इसने समाज की विषमताओं के स्थान पर निर्विकार समानता

स्थापना करना चाहा।

(4) गुरुनानक :– गुरु नानक का जन्म पंजाब के गुजरांवाला जिले के तलवंडी में 1469 ई० में एक खत्री परिवार में हुआ था। वे जन्मजात वैरागी, भक्त एवं ज्ञानी थे। वे संस्कृत और फारसी के ज्ञाता थे। उसने ब्रम्ह के संबंध में विचार, जगत संबंध में विचार, जीव और आत्मा संबंधी विचार किये। वे जाति प्रथा के विरोधी थे तथा हिंदू मुस्लिम समन्वय स्थापित करना चाहते थे। वे ईश्वर को राम, गोविन्द, हरि एवं तथा रहीम के नाम से पुकारते थे। वे स्त्रीयों के लिये उदार सिद्धान्त के पक्षपाती थे तथा मानवतावाद के पोषक थे।

(5) चैतन्य महाप्रभु :– इनका जन्म बंगाल के नदिया जिले में 18 फरवरी 1486 में हुआ था। बाल्यकाल में ही ये व्याकरण, स्मृति, न्याय, दर्शन में विशेषता हासिल किया। इन्होंने सन्यासी जीवन व्यतीत करने का संकल्प लिया। चैतन्य का धार्मिक दृष्टिकोण एकेश्वरवाद, आदि शक्ति, कृष्ण रस सागर, जीव आत्मा, प्रकृति, प्रेम तथा भक्ति ओत-प्रोत था। उसने मोक्ष के लिये कृष्ण नाम को बीज मंत्र बताया। वह मार्टिन लूथर कि तरह धर्म में मूल परिवर्तन नहीं बल्कि धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करना चाहता था।

(6) ~~वल्लभाचार्य~~ :– वल्लभाचार्य :– वल्लभाचार्य का जन्म 1479 ई० में चम्पारण में हुआ था। वल्लभाचार्य को भारतीय सभ्यता के अन्धकारमय युग का दीपक कहा गया है। ~~इनकी~~ वल्लभाचार्य कि शिक्षा बनारस के प्रकाण्ड विद्वान के संपर्क में हुआ था। इसने भारतीय दर्शन के 16 विभागों के अतिरिक्त, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य तथा निम्बार्क के दार्शनिक विचारों का अध्ययन किया। इन्हें गोपीनाथ तथा विट्ठल नामक दो पुत्र थे। वल्लभाचार्य ने पूर्व मीमांशा एवं उत्तर मिमांशा की व्याख्या लिखी। वल्लभाचार्य केवल दार्शनिक ही नहीं बल्कि महान धर्म चिंतक भी थे। उन्होंने मोक्ष के तीन साधन कर्म, ज्ञान और भक्ति बताया। वल्लभाचार्य जी ने जाति प्रथा के घोर विरोधी थे तथा समाज में यथास्थिति के प्रबल समर्थक थे। वल्लभाचार्य ने स्त्री-पुरुष के बीच कोई भेद नहीं माना। उन्होंने अन्तरजातिय विवाह को प्रोत्साहन किया।

MARCH 2018

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

Scanned with Can

iday

(7) तुलसीदास :— तुलसीदास का जन्म बांदा जिले के राजापुर गांव में ~~हुआ~~ 1554 ई० में हुआ था। उन्होंने रामचरितमानस जैसे प्रसिद्ध ग्रंथ कि रचना कि जिसमें राम कथा का वर्णन किया था। इस ग्रंथ में उसने अपने इष्ट देव राम कि जन्म से व्याख्या किया तथा सभी जीव जन्तु तथा मानव में समन्वय स्थापित किया। भगवान राम के गुणगाथा में तुलसीदास ने सभी जाति, धर्म, संस्कृति के बन्धनों को त्याग दिया। उनके इष्टदेव राम सभी धर्मों के प्रतिनिधित्व करते थे। मानव एक जगत के नाता के सिद्धान्त द्वारा तुलसीदास हिन्दु समाज के सभी को समाप्त करना चाहता था। तुलसीदास आत्मा को शाश्वत सत्य तथा ईश्वर का अंश स्वीकार किया। उन्होंने लिखा है कि — सीया राम मय सब जग जानी, करहु प्रणाम जोड़ युग पाणि।

इसके अतिरिक्त कई धर्म सुधारक थे जैसे — सूरदास, रैदास, दादु, मलूकदास, रज्जब, नामदेव, मीराबाई आदि थे जिन्होंने अपने धार्मिक विचारधारा से भक्ति आन्दोलन के मार्ग को प्रशस्त किया। उपर्युक्त विचारकों ने भक्ति आन्दोलन के ~~मार्ग~~ पृष्ठभूमि तैयार किया जिसके फलस्वरूप कालान्तर में हिन्दु और मुसलमान एक दूसरे के निकट आ गये। इस आन्दोलन के फलस्वरूप ही आगे चलकर अकबर ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाया।

Scanned with Can